Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 6 | ISSN : 2582-0095

पंचलाइट' फिल्म की पटकथा का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मतीन अहमद
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

Article Info
Volume 6, Issue 6
Page Number : 131-138

Publication Issue :
November-December-2023

Article History
Accepted : 10 Dec 2023
Published : 30 Dec 2023

शोध सार - फ़िल्म का आधार उसका कथानक होता है । कथानक को पर्दे पर उतारने के लिए तकनीकी रूप से पटकथा के रूप में लिखा जाता है । गंभीर साहित्य पर फिल्म का निर्माण एक चुनौतीपूर्ण कार्य है । इसमें एक और तो रचना की साहित्यिकता को अक्षुण रखना है दूसरी ओर उसे जनसामन्य के लिए ग्राह्य भी बनाना है । इसलिए साहित्यिक कृति पर फ़िल्म बनाने में पटकथा लेखन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है । रेणु कृत कहानी 'पंचलैट' पर 'पंचलाइट' फ़िल्म का निर्माण इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है । इस फ़िल्म में एक छोटी कहानी को विस्तार दिया गया है । कहानी में प्रेम के साथ-साथ जातिगत अन्तर्विरोध को भी बखूबी अंकित किया गया है । कहानी में मौजूद दृश्यों को तो हू-ब-हू रखा ही गया है, कुछ ऐसे दृश्य भी बनाए गए है जो कहानी में प्रत्यक्ष रूप से नहीं है लेकिन यह दृश्य कहीं भी कहानी के स्वभाव से अलग दिखाई नहीं देते वे पूरी तरह कहानी के परिवेश में रचे-बसे हैं । कहानी को विस्तार और रोचकता प्रदान करने के लिए गीतों का सुंदर समन्वय भी दिखाई पड़ता है । फ़िल्म निर्माण की दृष्टि से 'पंचलाइट' पटकथा के स्तर पर कथा को फ़िल्म में ढालने का उल्लेखनीय और सार्थक प्रयास है ।

बीज शब्द – पटकथा, फ़िल्म निर्माण, दृश्य-बंध, अन्तर्वस्तु, कथा-विस्तार ।

फिल्म निर्माण के पीछे जिस तत्व की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है, वह है फिल्म का कथानक । फिल्म की विधा मनोरंजनात्मक लक्ष्यों के साथ निर्मित की जाती है। यही कारण है की फिल्म कथानक में प्राय: ऐसे कथानकों का चयन किया जाता है जो मनोरंजन को केंद्र में रखकर लिखी गयी हो। हिंदी फिल्म उद्योग मनोरजन के इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु बंधी बंधाई लीक पर चलने लगा, और यही कारण है कि हिंदी में फार्मूला फिल्मों का निर्माण सबसे अधिक हुआ है। साहित्य अथवा गम्भीर विषयों पर फिल्म बनाने का प्रयास किसी भी अन्य भाषा की तुलना में बहुत कम रहा है। इक़बाल रिजवी इस सन्दर्भ में लिखते हैं "दरअसल हिंदी की साहित्यिक कृतियों पर सफल फिल्म ना बन पाने के कई कारण हैं। साहित्य लेखन अलग विधा है । कहानी या उपन्यास का सृजन एक नितांत व्यक्तिगत कर्म है। जबकि फिल्म लेखन में निर्देशक, अभिनेता अभिनेत्रियों यहां तक कि कैमरामैन को निर्देशक की दृष्टि पर निर्भर रहना पड़ता है। फिल्म एक लोक विधा है। साहित्य

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शिक्षतों की विधा है। फिल्म तो रामलीला और लोकनाट्य की तरह आम जनता तक अपनी बात पहुंचा दी है उसका उद्देश्य मनोरंजन है चाहे उसके दर्शक अनपढ़ हो या पढ़े लिखे ।"[1]फिल्म उद्योग के अंतर्गत कई ऐसे वर्गीकरण दिखाई देते हैं जो फिल्म निर्माण की धारा का विभाजन करते हुए दिखाई देते है, ऐसे में कला फिल्मों की श्रेणी में बहुत से ऐसे प्रयास दिखाई देते हैं जिनमें साहित्य अंतर्वस्तु को आधार बनाकर फिल्म रचना की गयी,[2] किन्तु मुख्य धारा के मनोरंजनात्मक प्रयासों में यह न के बराबर ही कही जा सकती है और इसके पीछे यही कारण दिया जाता रहा है कि साहित्य की गम्भीर अंतर्वस्तु के साथ फिल्म उद्योग न्याय नहीं कर पता है।

फणीश्वर नाथ रेणु का कथा साहित्य मनोंरजन और साहित्य गम्भीरता के सम्मिश्रण के तौर पर प्रस्तुत होता है यही कारण है कि रेणु की कहानियों को फिल्म पटकथा में ढालना सरल प्रतीत होता है। रेणु के कथा साहित्य को आधार बनाकर फिल्म एवं टेलीविजन पर कई प्रयास किये गये, जिसमें सबसे उम्दा प्रयास तीसरी कसम के रूप में हमारे सामने हैं। किन्तु अभी हाल में आई फिल्म पंचलाइट इस सन्दर्भ में विशेष उल्लेखनीय है। इस फिल्म में एक बहुत छोटी कहानी का विस्तार कर जिस तरह फिल्म के रूप में प्रस्तुत किया गया है वह साहित्य अंतवर्स्तु के फिल्म रूपांतरण का बढ़िया उदाहरण है।

फिल्म निर्माण की प्रक्रिया में, फिल्म का कथानक सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इस कहानी को फिल्म में ढालने के लिए कुछ बदलाव किये गये हैं। फिल्म का कथानक कहानी के समान ही चलता है किंतु जहां कहानी में ग्रामीण जातीय व्यवस्था को प्रस्तुत करने के साथ सामाजिक अंतर्विरोध को व्यंग्यात्मक ढंग से प्रकट करने की कोशिश रेणु ने की है वहीं फिल्म में भी जातीय अंतर्विरोध को दिखाने का प्रयास तो अवश्य है किंतु यहां पर प्रेम कहानी पर अधिक बल दिया गया है। इसका कारण यह भी है कि फिल्म के रूप में पटकथा को बनाने के लिए कहानी में आवश्यक विस्तार करना जरूरी था। फिल्म के शुरुआत में भी एक डिस्क्लेमर आता है जिसमें स्पष्ट किया गया है कि कहानी को आधार बनाकर पटकथा लेखन के लिए कहानी में कहीं कहीं कुछ जोड़ एवं बदलाव किए गए हैं। कहानी एवं पटकथा लेखन अलग-अलग प्रक्रिया होती है और फिल्म में ढालने के लिए किसी भी कहानी को पटकथा के माध्यम से ही इच्छित माध्यम के रूप में प्राप्त किया जाता है। फिल्म की कहानी बिहार के ग्रामीण अंचल के सांस्कृतिक परिवेश के अंतर्गत बुनी गई है। कहानी में भी यही परिवेश, उक्त भूमि के तौर पर हमें दिखाई देता है। फिल्म जब शुरू होती है तो उस दृश्य को सबसे पहले दिखाया गया है जहां गांव में महतो टोले के पंच बाजार से पंचलैट खरीद कर लाए हैं। रास्ते में उन्हें दूसरी जातियों के कई लोग दिखाई देते हैं जिनके मोहल्लों में पहले से ही पंचलैट की सुविधा उपलब्ध है अत: वह जलन वश छींटाकशी करते हुए दिखाई देते हैं। कहानी भी ठीक इसी प्रकार शुरू होती है जहां पंचलाइट के आने के साथ गांव के अन्य मोहल्ले के व्यक्तियों द्वारा महतो समाज पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी की जाती है। कहानी का अंश है- "गांव के बाहर ही ब्राह्मण टोले के फुंटगी झा ने टोक दिया-कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो?

देखते नहीं हैं, पंचलैट है! बामन टोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन! टोले-भर के लोग जमा हो गए। औरत-मर्द, बूढ़े-बच्चे सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आए, चल रे चल! अपना पंचलैट आया है, पंचलैट!"[3]

फिल्म में इसके पश्चात गोधन एवं मुनरी की कथा को विस्तार पूर्वक दिखाया गया है। जहां यह बताया गया है कि किस प्रकार गोधन अपने पिता का गांव छोड़कर अपने नानी के गांव आ जाता है और यहां पर अपने नानी के संपत्ति को प्राप्त करने के लिए उसे समाज के पंचों से बार-बार लड़ना पड़ता है। समाज के पंच गोधन को उसका अधिकार देने के पक्ष में नहीं है एवं गोधन अपना अधिकार लेने के लिए किसी भी प्रकार के अनुचित कार्य को नहीं करना चाहता। इससे नाराज होकर पंच उसे जाति से बहिष्कृत कर देते हैं और किसी भी प्रकार के सामाजिक कार्यों में उसके शामिल होने पर प्रतिबंध लगा देते हैं। वहीं वही दूसरी तरफ गुलरी काकी की बेटी मुनरी गोधन के प्रति आकर्षित है और अपने हृदय में गोधन के लिए भावनात्मक लगाव रखती है। इसलिए गांव वालों और मां के मना करने के बावजूद वह बार-बार गोधन से मिलती भी है और गोधन की सहायता भी करती है। फिल्म में दोनों की कहानी को आधार बनाकर ही मुख्य कहानी के लक्ष्य को प्राप्त किया गया है।

कहानी में मुनरी तथा गोधन का उल्लेख बहुत सीमित शब्दों में फणीश्वर नाथ रेणु ने किया है। वह कहानी में केवल कुछ पंक्तियों में जिक्र करते हैं कि जब समाज के लोग पेट्रोमैक्स को जलाने में सफल नहीं हो पाते तो वे अपने अपमान का कारण इस को मानते हैं। तब समाज की लड़की मुनरी यह सोचती है कि गोधन को इस काम के लिए बुलाया जा सकता है क्योंकि गोधन काफी समय तक शहर में रहा है और उसे पेट्रोमैक्स चलाना आता है। यहां से गोधन एवं मुनरी की संक्षिप्त प्रेम कहानी का परिचय कहानी में दिया गया है, जिसे आधार बनाकर एक प्रेम कथा के रूप में फिल्म इसे अपेक्षित विस्तार प्रदान किया गया है। जिस प्रकार कहानी में रेणु कहते हैं कि- "गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुंह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले? वह जानती है कि गोधन पंचलैट बालना जनता है। लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। मुनरी की मां ने पंचायत से फरियाद की थी कि गोधन रोज उसकी बेटी को देखकर सलम-सलम वाला सलीमा का गीत गाता है- "हम तुमसे मोहोब्बत करके सलम! पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गांव से आकर बसा है गोधन और अब टोले के पंचों को पान-सुपारी खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रुपया जुरमाना! न देने से हुक्का-पानी बन्द। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए! मुनरी उसका नाम कैसे ले? और उधर जाति का पानी उतर रहा है।"[4] इसी प्रसंग को आधार बनाकर पटकथा में पूरी प्रेम कहानी के विस्तार को संयोजित किया गया है। हम समझ सकते हैं कि रेणु के लिए इतना विस्तार मुन्नी और गोधन की कहानी को देना इसलिए भी संभव नहीं था क्योंकि वे अपनी कहानी को ग्रामीण अंचल के जातीय व्यवस्था और उनके बीच में होने वाली अंतर्विरोधात्मक तकरार को प्रस्तुत करने का था ना की प्रेम कहानी को प्रस्तुत करने का। वहीं फिल्म इसे नये विस्तार देती है, "वहीं अररिया के साहित्यकार सुशील श्रीवास्तव ने बताया कि दरअसल पंचलाइट का मतलब पेट्रोमैक्स होता है। इस कहानी में समाज में जातीयता भेदभाव पर कुठाराघात किया गया है। इसके माध्यम से समाज की विभक्तियों को खूबसूरती से वर्णित किया गया है।"[5] इसलिए रेणु संक्षेप में ही कहानी के मुख्य नायक का परिचय एवं उसका संबंधित स्थिति को लक्ष्यार्थ रूप में स्पष्ट करते हैं। नायक की महत्वपूर्ण भूमिका को उभारने के लिए रेणु के लिए इतना वर्णन उपयुक्त था। फिल्म इसी को केंद्र में रखकर विकसित होती है, इस प्रकार हम देख सकते हैं कि फिल्म को मनोंरजन की दृष्टि से उपयुक्त बनाने के लिए कहानी के इस केंद्र पर फ़िल्मकार ने अधिक बल दिया है।

फिल्म में पूरी कथा फ्लैशबैक में चलती है और विस्तार से सभी संदर्भों को मुनरी तथा गोधन के परिप्रेक्ष्य में ही स्पष्ट किया जाता है। कहानी एवं सिनेमा सबसे बड़ा अंतर है की कहानी में जहां ग्रामीण अंचल की जातीय व्यवस्था एवं उसकी सामाजिक संरचना को नायक की तरह प्रस्तुत किया गया है वहीं फिल्म में अपने माध्यम की प्रस्तुति की सुविधा के कारण नायक और नायिका के तौर पर मुनरी और गोधन को उभारा गया है। अन्य कलाकारों को सहायक कलाकार के तौर पर प्रस्तुत करते हुए कहानी के मूल अर्थ को प्राप्त करने की कोशिश की गई है। अगर दर्शकपहले फिल्म देखता है और बाद में कहानी पढता है तो वह इस अंतर को अधिक बेहतर समझ पाएगा क्योंकि कहानी में कहीं भी प्रेम कहानी को अधिक महत्व नहीं दिया गया है बल्कि सामान्य जीवन में किस तरह से युवा लोगों को सामाजिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है एवं युवाओं को कैसे उनके व्यवहार एवं परिवर्तन के लिए दंडित किया जाता है इस पर कहानीकार का बल रहा है किन्तुफिल्मकार इस दृष्टिकोण से मुनरी और गोधन की कहानी को नहीं दिखाता बल्कि एक प्रेम कथा के रूप में ही इस कहानी को प्रस्तुत करता है। जाति व्यवस्था और संस्कृति के अंतर्विरोध को फिल्म अंतिम आधे घंटे में प्रस्तुत करने का कार्य करती है। यहाँ भी गोधन समाज के काम आया तो उसे सामान्य बॉलीवुड फिल्म के हीरो की तरह ही पेश किया जाता है। फिल्म पटकथा में सामान्य प्रेम कथा के सामान ही गोधन को हीरो बनाने की कोशिश की गई है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के झंडे गाड़ता हुआ दिखाई देता है। स्पष्ट रूप से यहां पर भी हिंदी फिल्म की ट्रेडिशनल ट्रीटमेंट को हम देख सकते हैं जहां नायक कहानी पर कई बार भारी पड़ने लगता है। इस फिल्म की अपनी सीमाएं हैं जिससे हम इंकार नहीं कर सकते। तीसरी कसम फिल्म से अगर हम इस फिल्म की तुलना करें तो यह व्यर्थ होगा क्योंकि तीसरी कसम में कहीं भी कहानी का विस्तार नहीं किया गया अथवा कहानी का नायक हीरो में बदलता हुआ नहीं दिखाई देता बल्कि कहानी उसी रूप में व्यक्त होती है जिस रूप में रेणु ने अपनी अभिव्यक्ति में उसे प्रस्तुत किया था। किंतु पंचलाइट फिल्म की प्रस्तुति में बहुत कुछ परिवर्तित हो जाता है। साहित्यिक कहानी का मुख्य हिस्सा शुरुआत के 20 मिनट और अंत के 40 मिनट में सिमटा हुआ है बाकी जो विस्तार हमें फिल्म में दिखाई देता है वह उसे पूर्ण को प्रेम कहानी के तौर पर प्रस्तुत करने की कोशिश के रूप में ही सामने आता है। इस तरह पटकथा रूपांतरण के रूप में जब इस फिल्म का हम अध्ययन करते हैं तो कहानी के केन्द्रीय तत्व में परिवर्तन देखते हैं जो दृश्य श्रव्य माध्यम के रूप में आकर्षक बनाने के लिए आवश्यक भी है, "साहित्यिक कृतियों पर फिल्म बनाने के पीछे पहली शर्त है निर्माता–निर्देशक का रचना के मर्म तक पहुंचने के साथ ही साहित्यकार के मानसिक बुनावट को भी समझना। बाजारवाद, तकनीकी विकास, उदारवाद का व्यापक और स्पष्ट प्रभाव हिंदी सिनेमा पर देखा जा सकता है।"[6]पंचलाइट फिल्म की कसौटी पर साहित्यिक कृति को बेहतरीन ढंग से ढालने का प्रयास माना जा सकता है जिसमें आधुनिक फिल्म मानकों को सुगमता से समाहित किया गया है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं की फिल्म निर्माण की दृष्टि से 'पंचलाइट' पटकथा के स्तर पर कथा को फिल्म में ढालने का उल्लेखनीय प्रयास है । कथानक के माध्यम से ही फिल्म को फिल्मांकित किया जाता है । पटकथा के रूप में ढल जाने के बाद साहित्यिक कृतियों को पर्दे पर उतारना सरल हो जाता है। इस फिल्म में इस स्तर पर बिना कथा में छेड़छाड़ किये हुए पटकथा को तैयार किया गया है, जोकि साहित्यिक गम्भीरता को भी बनाये रखता है तथा फिल्म के स्तर पर मनोरंजक प्रस्तुति सम्भव हो पाती है । साहित्यकारों को फिल्म माध्यम से यही शिकयत रही है की वह साहित्य संवेदना को

फिल्म प्रस्तुतियों में खो देते है है, इस कड़ी में यह फिल्म साहित्य कृतियों के फिल्म रूपान्तर के सन्दर्भ में एक बेहतरीन प्रयास बनकर सामने आता है ।

सन्दर्भग्रन्थ-

1. इक़बाल रिजवी, हिंदी समय, पृष्ठ https://www.hindisamay.com/content/4693/1/इक़बाल-रिजवी-सिनेमा-सिनेमा-और-हिंदी-साहित्य.cspx

2. जनसत्ता, 11, 2016, पृष्ठ रविवारीय

3. फणीश्वर नाथ रेणु: रेणु रचनावली, संपादक-भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 193

4. वही, पृष्ठ 195

5.न्यूज 18, रिपोर्ट, पृष्ठ https://hindi.news18.com/news/bihar/araria-literature-lovers-are-happy-with-panchlight-film-in-renu-village-1162230.html

6. जनसत्ता, 11, 2016, पृष्ठ रविवारीय